सप्तम अध्याय

अ) उपसंहार ।

आ) परिशिष्ट ।

सप्तम अध्याय

(अ) उ प सं ह ा र :-

'खंजन नयन' सूर जीवन से सम्बन्धित एक सार्थक कृति है, जिस के द्वारा रचनाकार ने ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य एवं प्राप्य सामग्री के आधार पर सूर जीवन से सम्बन्धित सभी प्रकार की भ्रान्तियों का निराकरण करते हुए प्रामाणिक ढंग से सूर जीवन वृत का प्रस्तुतीकरण किया है । वस्तुतः यह एक साहित्यिक कृति मात्र न होकर एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ भी है ।

उपन्यास का कथानक सूर जीवन के उदय काल से निर्वाण अथवा देह त्याग तक का सविस्तार ब्योरा प्रस्तुत करता है जिसमें यथा स्थान उचित ढंग से ऐतिहासिक - पौराणिक व सांस्कृतिक, धार्मिक प्रसंगों को भी प्रस्तुत किया गया है, किन्तु यह प्रस्तुतीकरण मुख्यतः सूर कथा तथा तत्कालीन देश-काल वातावरण के चित्रण व समाज की मानसिक, धार्मिक, नैतिक, राजनैतिक प्रवृत्तियों एवं परिस्थितियों के अंकन के लिए ही उद्धृत किए गए हैं । ऐसे स्थल कलात्मक प्रभाव की सृष्टि के अनिवार्य हेतु भी होते ही हैं ।

समस्त उपन्यास राष्ट्रीय स्तर पर अपने कथावस्तु में व्यापार क्षेत्र का परिचय देता हुआ चलता है जिसमें मध्य कालीन भारतीय जीवन में भक्ति के एक एक राष्ट्रीय आन्दोलन का परिचयात्मक नहीं अपितु विस्तृत स्तर पर प्रभाव सम्पन्न ब्योरा मिलता है । विभिन्न साधु सन्तों आचार्यों व सम्प्रदायों के साथ साथ सूफी भक्तों के जुड़ को भी समेट कर जहाँ रचनाकार ने अपनी साहित्यिक ईमानदारी का परिचय दिया है वहीं सगुण, निर्गुण प्रेम मार्गीय शाखा का परिचय देते हुए मध्य युग में भारतीय धर्मों में प्रचलित बहुचर्चित सूफी सम्प्रदाय का साहित्यिक परिचय देते हुए अपने गैर - पक्षपाती दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हुए समन्वयात्मक (धर्मों एवं सम्प्रदायों के प्रति) दृष्टि को प्रस्तुत किया है । विविध मत मतान्तरों से गुज़रते हुए भी अन्तिम चरण में कथाकार सगुण भक्ति पद्धति में भी प्रेम भक्ति का ही निर्वाह करते जाते हैं ।

उपन्यास 'खंजन नयन' का मूल कथानक जैसा कि स्पष्ट है सूर जीवन कथा से ही सम्बद्ध है । कथा का शुभारम्भ सूर की किशोरावस्था अर्थात् उन्नीस वर्ष के समय से होता है । सूरदास जी वृन्दावन जा रहे हैं और नाव दो एक कोस वृन्दावन से इधर ही रोक ली जाती है क्योंकि कुछ अशुभ घटना की खबर से आशंकित होकर मल्लाह नाव को रोक देना ही उचित समझता है । यहीं से जहाँ तत्कालीन सामाजिक बिखराव भरे जीवन का चित्रण होना शुरू हो जाता है वहीं सूर जीवन परिचय, यात्रा उद्देश्य भी स्पष्ट होने लगता है । यथा स्थान अतीत के चित्रों दृश्यों के माध्यम से सूर अपने जन्म से बाल्यकाल का परिचय देते चलते हैं । किन कारणों का उन्होंने घर छोड़ा और उनका गायन वादन एवं भक्ति रूझान किन परिस्थितियों में आरम्भ हुआ, इसका

पूर्ण परिचय भी उनके स्मृति - दृश्यों के माध्यम से ही मिलने लगता है । सूरदास जो सगुण भक्ति मार्ग की कृष्ण भक्ति शाखा के ही नहीं अपितु समस्त भक्ति साहित्य के सर्वाधिक चर्चित व माने जाने वाले वात्सल्य- प्रेम भक्ति के कवि रहे हैं और उनको दिया गया सूर, सूरज या सूर्य का सम्मान नाम कदाचित कहीं गलत व अनुचित या अधूरा नहीं लगता । इस तथ्य को सार्थकता को बनाये रखने व पुष्ट प्रामाणित करने का नागर जी ने भी यथा सम्भव प्रयास सिद्ध कर दिखाया है । उन्होंने हर प्रकार से उनके कथनों और वातावरण संदर्भ अनुरूप यथा स्थान उनके गीतों, पदों के उद्धरणों द्वारा यह काम अंजाम दिया है । यूँ तो सूर जीवन वृत्त व साहित्य रचना से सम्बन्धित पर्याप्त प्रामाणित सामग्री मिल जाती है किन्तु यह कहना कदाचित अतिशयोक्ति पूर्ण न होगा कि कोई भी पाठक एवं श्रोता खंजन नयन के श्रवण पठन के बाद ईमानदारी से सूर, सम्बन्धी इस पुस्तक के बारे में मेरे विचारों का समर्थन करने से कदापि नहीं हिचकिचाये गा । सूर जीवन यात्रा एवम् धर्म प्रचार प्रसार सम्बन्धी जितनी भी सामग्री प्रस्तुत पुस्तक में मिलती है मानो बोलती सी लगती है कि 'नागर जी सूरदास जी के साथ - साथ घूमे फिरे हैं और उनका जीवन इतिहास ही नहीं उनका समस्त युग भी कलम बन्द करते रहे हैं ।

एक बात यहाँ और भी इस संदर्भ के एक महत्व पूर्ण तथ्य का उद्घाटन करती हुई चलती है वह यह कि स्वयं नागर जी का भारतीय दर्शन शास्त्र, उपनिषद, वेद, गीता, रामायण, महाभारत, कुरान व अन्य दर्शनों, भारतीय संस्कृति - सभ्यता व अन्य धर्मों के दर्शन व इतिहास का गहरा अभिरुचि पैठ रहा है, तभी तो वे इतने तर्क पूर्ण व पुष्ट रूप से अपने विचारों का युगानुरूप निर्वाह कर पाये हैं । ऐसे तेजस्वी कलाकार की रचना वस्तुतः अपने में एक

अनूठा प्रयोग होना ही चाहिए जो नागर जी ने सिद्ध कर दिखाया है ।

उपन्यास के कथा सार की दृष्टि से जैसा कि मैं पहले ही कहता आया हूँ कि खंजन नयन सूरदास जीवन चरित्र सम्बन्धी एक सहज किन्तु महत्वपूर्ण प्रामाणिक रचना है । जीवन के उदय काल से लेकर अस्ताचल तक का इस में पूरा वर्णन मिलता है । 'सूरदास' जी के विभिन्न नामों व उपनामों के साथ साथ इस रचना में उनके जीवन से सम्बन्धित छोटी बड़ी, विशेष - साधारण सामान्य - महत्वपूर्ण सभी सुखद दुःखद घटनाओं का पूर्ण इतिहास परिप्रेक्ष्य इस रचना में मिलता है । सूरदास जी के इस जीवन वृत को रचनाकार ने अपने ढंग से कलात्मक प्रभाव पूर्ण 'टच' दिया है । अपने विचारों के अनुरूप दृश्य संयोजना में नागर जी ने यथा स्थल प्रयोजनानुरूप अतीत के स्मृति दृश्यों एवं दृष्टान्तों का प्रयोग भी किया है । किन्तु यह माध्यम कहीं बोझिल हो ऐसा नहीं कहा जा सकता । समस्त कथानक का आरम्भ से अन्त तक सहज व सफल निर्वाह बन पड़ा है जोकि सुयोग भी है । तर्क व दर्शन जहाँ भी शामिल हुआ है वहाँ पर रचनाकार अपने इस रचना में सूर से अलग ही कुछ कहता हुआ जान पड़ता है । ऐसे स्थल वस्तुतः सार गर्भित, पठनीय एवं चिन्तन पूर्ण हैं ।

अन्ततः हम यही कह सकते हैं कि जिस स्तर पर 'खंजन नयन ' की रचना हुई है, उस स्तर पर निंदा, प्रशंसा, आलोचना या मूल्यांकन अधिक महत्व नहीं रखते । महत्व रखता है केवल आनन्द जो अनुभव किया जा सकता है ।

- - - - -